

पिथौरागण में निवास करने वाली राजी जनजाति समान्य परिचय



ओम प्रकाश सिंह यादव
प्रवक्ता (समाजशास्त्र),
राजकीय इंटर कालेज,
खाकोट पिथौरागण, उत्तराखण्ड, भारत।

शोध आलेख सार- प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना और वर्तमान में शिक्षा के विकास के लिए बनायी गयी आश्रम पद्धति योजना से व्यक्ति की मूल भूत अवश्यकता रोटी – कपड़ा–मकान, चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में आमुल–चुल परिवर्तन हुआ है। परिवार नियोजन की विभिन्न तकनीकीयों के बारे में वहां की महिलाओं और पुरुषों को समान्य जानकारी देखने में मिली उनके घर आवास योजना के तहत बनाये गये। मिले भले ही वह गुणवक्ता में उच्च कोटि के नहीं थे। स्थानी लोगों से बात करने पर पता चला की घर बनाकर इनको आवंटीत किया गया। तो वे लोग उस घर में रात को रहने को तैयार नहीं थे। और रात को छत गिर रहा है। ऐसा कह कर भग जाते थे। लेकिन आज कल उनके पास समान्य घर है। वे उसके नीचले हिस्से में गोट (पशुओं को बांधने का स्थान) व ऊपरी हिस्से में पटनी (बांस–बल्ली से पाटकर) उसमें रहते थे। पेय जल की आधुनिक योजनाओं से पीने का पानी उनको सुलभ हुआ है।

मुख्यशब्द- पिथौरागण, राजी जनजाति, प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना, विश्व।

विश्व के सुदूर एवं दुर्गम अनचलों में निवास करने वाली आदिम जन जाति का विचार अपने आप में जिज्ञासा एवं कोतुहल पैदा करता है। भारत के भी सुदूर अनचलों व जंगली क्षेत्रों में बसी आधुनिक सभ्यता से दूर अनेक जन जातियों में से एक रजवार वन रावत जन जाति के विषय में ज्ञान व देखने समझने की ललक लेखक को उनके निवास स्थानों पर खींचकर ले गई। उनके रहन–सहन समाजिक आर्थिक सांस्कृतिक और शैक्षिक ज्ञान का स्तर व उनसे परस् पराओं की सीख ने इसके सम्बन्ध में सोचने को मजबूर कर दिया, और लेखक को उनके बारे में यथार्थ व वस्तुनिष्ठ सर्वेक्षण की ओर ले गया। उत्तराखण्ड एवं पिथौरागण के अत्यन्त दुर्गम क्षेत्रों में निवास करने वाली आदिम जन जाति को रजवार या राजी नाम से जाना जाता है।

रजवार मूलतः उच्च हिमालीय क्षेत्रों व नदी धाटी के दुर्गम क्षेत्रों में समान्यतः पिथौरागण के लगभग 9 गांवों में विराजमान है। कथानकों के अनुसार रजवार लोंग अपनी उत्पत्ति राज घरानों से जोड़ कर पर्दित करते हैं। ये अपने को अस्कोट राज घरानों के कत्यूरी राजवंश से सम्बन्धित कहते हैं। इनके अनुसार छोटा भाई ने इनके साथ

छल करके राज पाठ ले लिया। और इनको जंगल जाने को मजबूर कर दिया। इसी कारण से वनराजी लोग कुछ समय पूर्व तक दण्ड प्रमाण नहीं करते थे। ये कहते थे हम लोग राजा हैं। और ये अस्कोट के राजा लोगों को “जौ दे दादा प्रमाण करते हैं”। राजी लोग इसे “जी रये” अर्थात् जीता रह कहते हैं। राजी पूर्वी कुमायूं व पश्चिमी नेपाल की अल्पसंख्यक जन जाति है। भौगोलिक रूप से पिथौरागण जनपद के किम खोला, चिफलतरा, कुटाजमतड़ी, मदनपुरी, कुटाजौरानी, कुलेख औलतड़ी, भगतिरवा और गाड़ा गांव में निवास करते हैं।

भारत सरकार ने सांविधानिक प्रावधानों के अन्तर्गत व्यक्ति के गरिमा पूर्ण जीवन जीने के अधिकार अनुच्छेद 21 व विभिन्न प्रावधानों को देखते हुए इनके विकास के लिए भारतीय संविधान के अनुच्छेद 15(4), 16(4), अनुच्छेद 17 अनुच्छेद 19, अनुच्छेद 23, 25, 26, 46, 164, 330, 332, 334, 335, 338, 339, 371, तथा पांचवीं व छठी अनुसूची तथा भारत सरकार द्वारा समय – समय पर इनके विकास के लिए बनाये गये प्रावधानों में किया गया है इनको भी जन जाति घोषित किया। इनके पूर्व भी उत्तराखण्ड की थारु, भोक्सा, जनसारी, भोटिया, को 1967 में ही जन जाति घोषित कर दिया गया था तथा 1975 में राजी जनजाति को आदिम जन जाति के रूप में घोषित किया गया।

राजवार लोगों के सर्वांगीण उत्थान के लिए भारत सरकार व प्रदेश सरकार निरन्तर प्रयास करती रही। किन्तु यह जन जाति विकास से कोसो दूर बनी रही। जन समान्य को इनके बारे में समान्य जनकारी 2002 की एक घटना से होती है। जिसमें धारचुला के स्थानीय लोगों ने भोटिया जन जाति के प्रति क्रिया के रूप में विधान सभा के निर्वाचन के समान्य चुनाव में राजी जन जाति के गगन सिंह राजवार को निर्दलीय चुनाव जीता कर विधान सभा में भेजने का काम किया। विधायक को समान्य लोगों ने निर्वाचित कर दिया और वह जीतने के बाद विधान सभा न जाकर जब उपजिलाधिकारी महोदय प्रमाण पत्र देने उसके घर गये तो वह भागकर जंगलों व गुफाओं में छिप गया। तभी जाकर जन समान्य इससे परिचित हुआ। तबसे सरकार व शिक्षा विद् तथा जिज्ञासु लोग इनके विषय में शोध करने लगे।

राजी जन जाति समाजिक रूप से सनातनी धर्म व प्रकृति प्रेमी के रूप में जानी जाती है। हिन्दू धर्म के 16 संस्कार गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक किसी ना किसी रूप में परिवर्तित रूप में पाये जाते हैं। भारत में निवास करने वाली, मंगोलाइड, आस्ट्रेलियाड, प्रजाति मध्य भारत और उत्तर पूर्वी भारत के जन जातियों के समान्य इनमें भी विशेष प्रकार के पर्व, त्यौहार, उत्सव साथ – साथ मनायें जाते हैं। संस्कार कार्य कराने वालों को धामि या गुरु नाम से जाना जाता है। वहां जाकर देखने व सुनने पर मुझे यह ज्ञात हुआ कि यहां पर संस्कारों का कार्य करने के लिए इन्हीं में एक व्यक्ति की नियुक्ति की जाती है। किमखोला गांव में पहली बार जय सिंह राजवार के विवाह समारोह में पूरोहित (पण्डित) गया था। ऐसे समान्य तौर पर संस्कारों का कार्य अपनी ही जाति समुह से किया जाता है। प्रजनन के बाद दो माह तक स्त्री को अशुद्ध माना जाता है। मृत्यु संस्कार में जलाने के साथ-साथ दफनाने की प्रथा प्रचलित है। हिन्दूओं की भौति सुबह – शाम पिपल-पानी देना तथा एक समय भोजन करते हैं। इसी भौति सभी संस्कार समान्य रूप से किये जाते हैं।

राजी लोगों का मुख्य व्यवसाय लकड़ी का चिरान है, मुसल बना करके ग्रामीण समाजों में बेचना तथा बल्ली-पट्टा बेचना तथा पतल एवं दोना ग्रामीण समाजों को बेचते हैं। साथ ही साथ लकड़ी के बने बर्तन एवं कृषि यन्त्रों के निर्माण बेचना तथा पतल एवं दोना ग्रामीण समाजों को बेचते हैं। साथ ही साथ लकड़ी के बने

बर्तन एवं कृषि यन्त्रों के निर्माण में सिद्ध हस्त एवं पारंगत माने जाते हैं। पहले ये वस्तुविनिमय किया करते थे। किन्तु अब यह नगण्य है। अगर समान्य रूप से तुलना किया जाये तो पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार व झारखण्ड में निवास करने वाली मूसहर जाति के समकक्ष इनको रखा जा सकता है। राजी लोगों के जीविकोपार्जन का मुख्य साधन कंदमूल फल व जंगली उत्पाद है। आज कल कृषि कार्यों में मजदूरी करके मनरेगा के तहत रोजगार करके अपनी जीविका चलाते हैं। साथ ही साथ पशुपालन के लिए 2001 में किये गये सरकारी प्रयासों के तहत इनकों कुछ गायें खरीद कर दी गई किन्तु एक दो को छोड़कर अधिकांश को गायों को बेच दिया या जंगलों में खुला छोड़ दिया और आज भी जंगली उत्पादों से ही जीविका चलाते हैं। शैक्षिक रूप से इनमें साक्षरता का स्तर न्यून है। आज कल आंगनबाड़ी केन्द्रों व प्राथमिक विद्यालयों में अधिकांश बच्चे पंजीकृत हैं तथा समान्य ज्ञान अर्जन कर रहे हैं। किन्तु आज भी हाई स्कूल से ऊपर तथा इण्टर से ऊपर स्नातक डीग्री वाले मात्र 3 लोग हैं। सरकारी सेवा में एक परिवार के 3 सदस्य हैं। इसके अलावा 450 परिवारों में कोई भी सरकारी सेवा में नहीं है।

सांस्कृतिक रूप से ये विशेष भेस-भूसा विशेष अवसरों पर पहनते हैं। खान – पान में उत्सवों में मक्की भात, बकरे के बलि, पीपल की पूजा गांवों की इष्टों की पूजा तथा बीमार पड़ने पर जंगली जड़ी-बुट्टीयों से अपना इलाज करते हैं। वहां जा करके लेखक ने पाया कि चिकित्सा विज्ञान के इन के ज्ञान को लेकर हम अंग्रेजी दवाओं के दुश प्रभावों से बच सकते हैं। तथा अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं। ये लोग आधुनिक सम्पर्क में आकर जड़ी-बुट्टी वाले पेय पदार्थों के स्थान पर आधुनिक पेय पदार्थ, दारु-शराब का उपयोग करने लगे हैं। जिससे 60 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के पुरुषों की संख्या नहीं के बराबर है। ये आधुनिक सम्पर्क से बाजार जाने लगे हैं और वहीं पर दारु पीकर के सो जाते हैं और घर की महिला घर तक पहुंचने के लिए जेब में कुछ पैसा छोड़कर बाकी लेकर चली जाती है। प्रकृति की पूजा करना, नदी, जल, सूर्य देवता (छूरमल देव), पीपल पूजा, पहाड़ पूजा किया करते हैं। अगर इनके प्रकृति प्रेम को देखा जाए तो आज विभिन्न देशों में पर्यावरण के सम्बन्ध में होने वाले सम्मेलन, जल – जमीन, जंगल बचाने का सम्मेलन, वन अधिकार अधिनियम, कार्बन टैक्स की व्यवस्था नहीं करनी पड़ती। मानव ‘जीयों और जीनें दो’ की परिकल्पना को सकार कर लेता। ये अन्धे विश्वास और पराम्परा में विश्वास करते हैं। इनका समाज एक सरल समाज है। इनके सरल समाज से प्रेरित होकर पूनर्जागरण के अग्रदूतों में समाजिक क्रान्ति के फांसीसी विचारक रुसों ने इन्हें प्रकृतिक पुत्र की संज्ञा से अभिहीत किया। भारतीय वांगमय में ‘माता – भूमि पुत्रों अहम् पृथीव्या’ कहा गया है। दुर्खिम महोदय ने इनके समाज को यान्त्रिक एकता से आवद्ध सरल समाज कहा है। यद्यपि वर्तमान समय में राजी जन जाति प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से वनों से लाभान्वित होते रहे हैं। किन्तु वनों पर अधिकार की समस्या को लेकर होने वाले तनावों को देखते हुए भारत सरकार ने वन अधिकार अधिनियम में संसोधन किया है। जिससे ये लोग जल जमीन और जंगल से वे दखल न हो सके और इनका जीविकों पार्जन भलीभौति चलता रहे। भारत सरकार ने विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं, स्वर्ण जयन्ति ग्राम स्वरोजगार योजना, ग्रामीण विकास योजनाएं, इन्दिरा आवास योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, अन्त्योदय योजना, पेय जल आपुर्ति के लिए प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना और वर्तमान में शिक्षा के विकास के लिए बनायी गयी आश्रम पद्धति योजना से व्यक्ति की मूल भूत अवश्यकता रोटी – कपड़ा-मकान, चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में आमुल-चुल परिवर्तन हुआ है। परिवार नियोजन की विभिन्न तकीनिकीयों के बारे में वहां की महिलाओं और पुरुषों को समान्य जानकारी देखने में मिली उनके घर आवास योजना के तहत

बनाये गये। मिले भले ही वह गुणवक्ता में उच्च कोटि के नहीं थे। स्थानी लोगों से बात करने पर पता चला की घर बनाकर इनको आवंटीत किया गया। तो वे लोग उस घर में रात को रहने को तैयार नहीं थे। और रात को छत गिर रहा है। ऐसा कह कर भग जाते थे। लेकिन आज कल उनके पास समान्य घर है। वे उसके नीचले हिस्से में गोट (पशुओं को बांधने का स्थान) व ऊपरी हिस्से में पटनी (बांस-बल्ली से पाटकर) उसमें रहते थे।

पेय जल की आधुनिक योजनाओं से पीने का पानी उनको सुलभ हुआ है। तथा दूर तक पानी ले जाने के लिए नहीं जाना पड़ा है। चिकित्सा के विभिन्न योजनाओं के द्वारा उनकी औसत आयु तो बढ़ी है। किन्तु मद्य पान से पुरुष 60 वर्ष की आयु तक विरले ही जी पाते हैं। इसी लिए हमारे मनिषियों ने कहा है कि “मद्यपान सूरापानम् सर्वथा अनर्थ कारकम्” सरकार को चाहिए कि उनके प्राकृतिक ज्ञान का उपयोग कर जीवन को सफल बनाने का ज्ञान प्राप्त करें। और उन्हें आधुनिक सभ्यता के विनाशकारी तत्वों से बचायें। जिससे भारतीय संस्कृति के प्राचीन ज्ञान को संरक्षण मिलने के साथ-साथ उनके जीवन स्तर को सुधारा जा सके।

संदर्भ सूची –

1. प्राचीन भारत का इतिहास डा० के०सी० श्रीवास्तव ।
2. भारत की जन जातियों पर अध्ययन – मजूमदार एवं मजुमदार।
3. समाज शास्त्र शब्दकोष – रावत पब्लिक केशन।
4. भारतीय समाज – रावत पब्लिक केशन ।
5. कुमांयू का इतिहास – बी०डी० पाण्डेय ।
6. कुमांयू एवं गढ़वाल की लोक कथाओं की विवेचन डा० प्रयाग जोशी।
7. शोध अध्ययन जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान पिथौरागण ।
8. भाषा एवं मनोभाव एवं भाषा प्रयोग सर्वेक्षण – भारतीय संस्थान मैसुर डा० परमान सिंह एवं डा० सत्येन्द्र अवरस्थी ।
9. व्यक्ति साक्षातकार एवं अवलोकन ।
10. राजी समाज के प्रबुद्ध जनों द्वारा भाषा गत समस्या निवारण ।
11. भारत का संविधान ।